ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 20 अंक 50 कुल पृष्ठ-8 19 से 25 फरवरी, 2026 दयानन्दाब्द 202 सृष्टि सम्वत् 1960853126 सम्वत् 2082 फा. शु.-02

गुरुकुल धीरणवास का 53 वाँ वार्षिकोत्सव समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही सर्वोत्तम शिक्षा पद्धति है – स्वामी आर्यवेश

गुरुकुल परंपरा युवाओं को आत्मनिर्भर, नैतिक और राष्ट्रनिष्ठ बनाती है – स्वामी आदित्यवेश

गुरुकुलों में राष्ट्रवादी और विद्वान् युवकों का निर्माण होता है – बनवारी लाल पुनिया

गुरुकुल धीरणवास का 53वाँ वार्षिकोत्सव समारोह दिनांक 6 व 7 फरवरी 2026 को अत्यंत हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ। यह आयोजन गुरुकुल की स्थापना के 53 वर्ष पूर्ण होने तथा आर्य समाज के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। कार्यक्रम का शुभारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ, जिसका ब्रह्मत्व आचार्य देवदत्त शास्त्री ने संपन्न कराया। वैदिक मंत्रोच्चार से संपूर्ण परिसर आध्यात्मिक ऊर्जा से ओत–प्रोत हो उठा। यज्ञ के उपरांत सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी द्वारा ध्वजारोहण करके विधिवत कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में शिक्षा, संस्कृति और राष्ट्रनिर्माण पर वैदिक दृष्टि से गहन और प्रेरक चिंतन प्रस्तुत करते हुए कहा कि किसी भी राष्ट्र की आत्मा उसकी शिक्षा प्रणाली में निहित होती है। यदि शिक्षा अपनी जड़ों से कटी हुई हो, तो समाज दिशाहीन हो जाता है। उन्होंने कहा कि लॉर्ड मैकाले द्वारा स्थापित औपनिवेशिक शिक्षा–पद्धति का उद्देश्य भारतीयों में आत्मगौरव जगाना नहीं, बल्कि उन्हें प्रशासनिक आवश्यकता के अनुरूप ढालना था। परिणामस्वरूप यह व्यवस्था केवल नौकरीपरक मानसिकता उत्पन्न करती है, जबकि भारत की वास्तविक आवश्यकता जीवन–निर्माण, चरित्र–निर्माण और राष्ट्र–निर्माण की शिक्षा है।

वैदिक दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य 'सा विद्या या विमुक्तये' माना गया है अर्थात् वह विद्या जो अज्ञान, भय, संकीर्णता और अधर्म से मुक्ति दिलाए, इसी भावना को मूर्तरूप प्रदान करती है गुरुकुल शिक्षा प्रणाली। गुरुकुल में विद्यार्थी केवल विषय–ज्ञान ही नहीं प्राप्त करता, बल्कि अनुशासन, आत्मसंयम, सेवाभाव, सत्यनिष्ठा, राष्ट्रभक्ति और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे जीवन–मूल्यों को आत्मसात करता है। आचार्य और शिष्य का सम्बन्ध केवल औपचारिक नहीं, बल्कि आध्यात्मिक और सांस्कृतिक होता है, जिससे व्यक्तित्व का समग्र विकास सम्भव होता है।

स्वामी जी ने कहा कि यदि भारत को पुनः विश्वगुरु के पद पर प्रतिष्ठित करना है तो शिक्षा की दिशा को वैदिक आदर्शों के अनुरूप परिवर्तित करना होगा। आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी शेष पृष्ठ 2 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

पृष्ठ 1 का शेष

गुरुकुल धीरणवास का 53वाँ वार्षिकोत्सव समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

का समन्वय वैदिक जीवन–दृष्टि के साथ किया जाए, ताकि ज्ञान और संस्कार दोनों का संतुलित विकास हो सके। शिक्षा ऐसी हो जो व्यक्ति को केवल सफल ही नहीं, बल्कि श्रेष्ठ और उत्तरदायी नागरिक बनाए। स्वामी ने केंद्र सरकार से आग्रह किया कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की 200वीं जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में दिल्ली में महर्षि दयानन्द जी के नाम से एक भव्य अंतरराष्ट्रीय संग्रहालय की स्थापना की जाए। स्वामी जी ने बताया कि आर्य समाज ने केवल धार्मिक कुरीतियों का उन्मूलन ही नहीं किया, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन में भी चेतना की ज्वाला प्रज्वलित की। अनेक क्रांतिकारी, समाज–सुधारक और राष्ट्रनायक महर्षि दयानन्द के वेद–आधारित विचारों से प्रेरित थे। यह आवश्यक है कि नई पीढ़ी अपने इतिहास, संस्कृति और राष्ट्रगौरव से परिचित हो। संग्रहालय के माध्यम से आर्य समाज के योगदान को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत किया जा सकता है। स्वामी जी ने कहा कि यही सांस्कृतिक पुनर्जागरण भारत को आत्मविश्वास, नैतिक शक्ति और आध्यात्मिक नेतृत्व की ओर अग्रसर करेगा।

गुरुकुल धीरणवास के प्रधान एवं सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी ने अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान समय में समाज को सर्वाधिक आवश्यकता संस्कारित और चरित्रवान युवाओं की है। शिक्षा केवल डिग्री प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन को दिशा देने की प्रक्रिया है। गुरुकुल परंपरा युवाओं को आत्मनिर्भर, नैतिक और राष्ट्रनिष्ठ बनाती है। उन्होंने घोषणा की कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान शताब्दी वर्ष के अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी में अंतरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जाएगा, जिसमें विश्वभर से आर्य प्रतिनिधि भाग लेंगे। यह आयोजन वैश्विक स्तर पर वैदिक विचारधारा को सुदृढ़ करने का महत्वपूर्ण प्रयास होगा।

उद्योगपति एवं समाजसेवी श्री बनवारी लाल पुनिया ने गुरुकुल को बहुद्देशीय सभागार समर्पित करते हुए कहा कि गुरुकुलों में राष्ट्रवादी और विद्वान युवकों का निर्माण होता है, अतः समाज का दायित्व है कि वह ऐसे संस्थानों को सहयोग प्रदान करें। उन्होंने कहा कि यदि शिक्षा राष्ट्रभक्ति से जुड़ी हो तो समाज की दिशा स्वतः बदल जाती है।

उत्सव के प्रथम दिवस में शिक्षा, नारी सम्मान और सामाजिक चेतना पर विशेष मंथन हुआ। बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या ने कहा कि बेटियों की सुरक्षा केवल कानूनों और नारों से सुनिश्चित नहीं की जा सकती। इसके लिए समाज की सोच और व्यवहार में परिवर्तन आवश्यक है। जब तक परिवारों में संस्कार और समानता की भावना विकसित नहीं होगी, तब तक वास्तविक सुरक्षा संभव नहीं।

सार्वदेशिक आर्या युवती परिषद की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने वैदिक परंपरा के आधार पर नारी को शिक्षा और समान अधिकार देने का ऐतिहासिक कार्य किया। उन्होंने समाज को स्मरण कराया कि वैदिक संस्कृति में नारी को विदुषी, आचार्या और निर्णयकर्त्ता के रूप में सम्मान प्राप्त था। आज आवश्यकता है कि हम उसी मूल भावना को पुनर्जीवित करें।

कन्या गुरुकुल पंचगांव की आचार्या जयादेवी ने कहा कि आज बेटियों की शिक्षा और आत्मनिर्भरता का जो वातावरण निर्मित हुआ है, उसका श्रेय महर्षि दयानन्द के सामाजिक सुधार आंदोलन को जाता है। उन्होंने कहा कि नारी शिक्षित होगी तो परिवार शिक्षित होगा और परिवार शिक्षित होगा तो राष्ट्र सशक्त होगा।

समाजसेवी श्री विनोद पुनिया ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि चरित्रवान युवा ही किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति होते हैं। शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार प्राप्त करना नहीं, बल्कि समाज के प्रति उत्तरदायी नागरिक तैयार करना होना चाहिए। गुरुकुल व्यवस्था इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

किसान नेता श्री शमसेर नंबरदार ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने किसान को "राजाओं का राजा" कहकर श्रम और कृषि को सर्वोच्च सम्मान दिया। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता है कि हम किसान और श्रम की गरिमा को पुनः स्थापित करें। आर्य समाज वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से कार्य करते हुए समरस और सशक्त समाज के निर्माण में लगा है। उन्होंने यह भी कहा कि समाज को अंधविश्वास, पाखण्ड और अपराधी मानसिकता से मुक्त करना होगा। वेद आधारित जीवन पद्धति ही सामाजिक सौहार्द और नैतिक जागरण का सशक्त माध्यम है।

विशिष्ट अतिथि श्री देवेंद्र आर्य (प्रधान, आर्य समाज नागोरी गेट हिसार) ने कहा कि देश में स्थायी सामाजिक सौहार्द केवल वेद आधारित विचारधारा से ही संभव है।

मुख्य अतिथि ब्लॉक समिति अध्यक्ष श्री अजय गावड़ ने सामाजिक कार्यों में सामूहिक सहभागिता की आवश्यकता पर बल दिया।

मार्केट कमेटी के चेयरमैन श्री रविन्द्र रोकी ने नशे को समाज पर कलंक बताते हुए आर्य समाज के नशामुक्ति अभियान को समर्थन देने की घोषणा की।

समाजसेवी श्री वेदप्रकाश सोनी ने युवाओं को नशे और मोबाइल से दूर रहने का आह्वान किया।

श्री सुभाष पनिहार ने कहा कि वर्तमान समय में नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित करना आवश्यक है।

पार्षद प्रतिनिधि श्री संदीप धीरणवास ने ऋषि दयानन्द की विचारधारा को आज के समय में और अधिक प्रासंगिक बताया।

सांस्कृतिक सत्र में प्रसिद्ध कथावाचक आचार्य कुलदीप आर्य ने शहीद–ए–आजम भगत सिंह के जीवन और उनके विचारों पर प्रेरणादायक प्रस्तुति दी। संगीता आर्या ने महिला जागरण और राष्ट्रभक्ति से ओत–प्रोत भजनों की भावपूर्ण प्रस्तुति दी। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से गूँजायमान हुआ गुरुकुल परिसर।

इस अवसर पर कन्या गुरुकुल पंचगांव, गुरुकुल डोभी, गुरुकुल घिराय, गुरुकुल मताना डिग्गी, गुरुकुल आर्य नगर, गुरुकुल धीरणवास तथा ब्रह्म महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने देशभक्ति एवं वैदिक गीत प्रस्तुत कर कार्यक्रम को गरिमामय बना दिया। विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों में अनुशासन, संस्कार और आत्मविश्वास स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। समापन अवसर पर कार्यकारी प्रधान श्री सूबेसिंह आर्य ने सभी अतिथियों, सहयोगियों और उपस्थित आर्यजनों का आभार व्यक्त किया। सभी विशिष्ट अतिथियों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में विशेष रूप से गुरुकुल के मंत्री श्री सत्यप्रकाश आर्य, श्री दलबीर आर्य, कैप्टन सूबेसिंह आर्य, श्री सतपाल अग्रवाल, श्री अजमेर सिंह, श्री भूप सिंह आर्य, श्री मनीराम गोयल, श्री कृष्ण सैनी, श्री खजान सिंह, श्री सुरेन्द्र आर्य, श्री सुरेश आर्य, श्री बलवंत आर्य, श्री पवन कुमार, श्री तेलूराम आर्य, श्री मांगेराम, श्री जयवीर सोनी सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। आर्य समाज धीरणवास, रावलवास, नागोरी गेट, स्त्री आर्य समाज हिसार तथा विभिन्न गुरुकुलों से आर्यजन बड़ी संख्या में उपस्थित हुए। दो दिवसीय कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव के उपलक्ष्य में ग्राम–चांदपुर, जिला–जीन्द में आयोजित खेलकूद प्रतियोगिता भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

कार्यक्रम में तेजस्वी संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी पहुंचकर युवाओं का हौसला बढ़ाया

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव के उपलक्ष्य में ग्राम–चांदपुर, जिला जींद में दिनांक 12 से 15 फ़रवरी, 2026 तक भव्य खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र के अनेक युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता का उद्देश्य युवाओं में शारीरिक सुदृढ़ता, अनुशासन, खेल भावना और राष्ट्रभक्ति का विकास करना था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री स्वामी आदित्यवेश जी रहे।

अपने प्रेरणादायी संबोधन में स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि युवाओं को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को राष्ट्र और समाज के लिए समर्पित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने समाज में जन–जागृति, आत्मसम्मान और स्वावलम्बन का संदेश दिया था, जिसे आज की युवा पीढ़ी को आत्मसात करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में युवाओं के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं, जिनमें नशाखोरी और दिशाहीनता प्रमुख हैं। उन्होंने स्पष्ट कहा कि यदि युवा खेल को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं और उसे कैरियर के रूप में अपनाएं, तो न केवल उनका भविष्य सुरक्षित होगा, बल्कि राष्ट्र को भी सशक्त और अनुशासित नागरिक प्राप्त होंगे। उन्होंने युवाओं का आह्वान किया कि वे नशे से दूर रहें और खेल के माध्यम से अपने शरीर, मन और चरित्र को सुदृढ़ बनाएं। चरित्रवान और स्वस्थ युवा ही राष्ट्र की वास्तविक शक्ति होते हैं।

इस अवसर पर प्रदेश महासचिव श्री अशोक आर्य तथा प्रसिद्ध खिलाड़ी श्री वीरेंद्र पहलवान भी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने भी युवाओं को खेलों में बढ़–चढ़कर भाग लेने और अनुशासित जीवन अपनाने के लिए प्रेरित किया।

आयोजकों द्वारा मुख्य अतिथि स्वामी आदित्यवेश जी, श्री अशोक आर्य जी तथा श्री वीरेंद्र पहलवान जी का पुष्पमाला एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया। ग्राम पंचायत के सरपंच श्री राजेश नरवाल ने कार्यक्रम के सफल आयोजन पर सभी प्रतिभागियों और अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के संयोजक एवं आर्य युवक परिषद् के जिला अध्यक्ष श्री मनीष नरवाल ने संपूर्ण आयोजन की व्यवस्थाओं का सफल संचालन किया। उनके नेतृत्व में प्रतियोगिता सुव्यवस्थित एवं अनुशासित ढंग से सम्पन्न हुई। प्रतियोगिता में विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया तथा सभी प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन किया गया। कार्यक्रम ने यह संदेश दिया कि खेल केवल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और राष्ट्र निर्माण का माध्यम है। महर्षि दयानन्द के आदर्शों से प्रेरित यह आयोजन युवाओं के लिए नई दिशा प्रदान करने वाला सिद्ध हुआ।

श्री सत्यप्रकाश खन्ना जी का आकस्मिक निधन

मुझे यह जानकर अत्यंत दुःख हुआ कि श्री मनीष खन्ना के पूज्य पिता श्री सत्यप्रकाश खन्ना जी का विगत दिनों आकस्मिक निधन हो गया। श्री सत्यप्रकाश खन्ना जी सौम्य स्वभाव, उच्च संस्कारों एवं समाज के प्रति समर्पित भाव से कार्य करने वाले व्यक्तित्व थे। वे आर्य समाज के क्रिया–कलापों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते थे। ऐसे कर्मठ एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी महानुभाव का हम सभी के बीच से अचानक चले जाना निःसंदेह स्तब्ध करने वाला है। स्वामी जी ने बताया कि जब भी मैं अमृतसर प्रवास के दौरान उनसे मिलता था, तो श्री खन्ना जी बड़ी आत्मीयता और स्नेहभाव से मेरा स्वागत एवं सहयोग करते थे। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि ऐसे मिलनसार साथी के निधन से जहाँ खन्ना परिवार की अपूरणीय क्षति हुई है, वहीं मुझे भी गहरा आघात पहुँचा है। परंतु ईश्वरीय व्यवस्था को, न चाहते हुए भी, स्वीकार करना पड़ता है। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें तथा शोक–संतप्त परिवार व सगे–संबंधियों को इस दुःख को सहने की शक्ति दें।

आर्य समाज का एक अद्भुत सितारा – स्वामी इन्द्रवेश

– डॉ. श्याम देव

भारत वर्ष स्वतन्त्र हो चुका था सभी क्रान्तिकारी धीर-धीरे पहले अंग्रेज सरकार के और फिर कांग्रेस के बचे खुचे समय के शिकार हो चुके थे। नया राष्ट्र था नई सोच किन्तु पूरी तरह से आजादी न आ पाई और गोरी चमड़ी वाले अंग्रेजो के हाथ से राज्य सत्ता काली चमड़ी वाले अंग्रेजियत के गुलाम लोगों के हाथ में आ गई। बदला कुछ भी नहीं, वही राजतन्त्र ज्यों का त्यों, वही आर्थिक नीति किसान व मजदूर का शोषण, जातिवाद व सम्प्रदायवाद को बढ़ावा, वोट की राजनीति, शिक्षा का अभाव, बढ़ती जनसंख्या, सरकार की तुष्टिकरण की नीति, भ्रष्टाचार, न्याय का अभाव, पक्षपात, तानाशाही सब कुछ जस का तस। बीस वर्ष की आजादी हो चुकी थी संविधान में निर्धारित दस वर्ष के लक्ष्य संकल्प व राष्ट्रभक्ति के अभाव में अधूरे पड़े थे। अनपढ़ता के शिकार किसान व मजदूर अपना भला-बुरा सोचने में असमर्थ थे। ऐसे समय में आर्य समाज व अन्य धार्मिक संगठन ढ़ीले पड़े हुए थे। आजादी पाकर उनका जोश ठण्डा पड़ चुका था। आगे क्या करना है किसी के पास कोई विचार नहीं सब के सब अपने-अपने आश्रमों, अखाड़ों व मठों में जाकर आराम फरमाने लगे जैसे अब अंग्रेज चले गए तो उनके काम की इतिश्री हो गई। आर्य समाज के वर्चस्वी और यशस्वी नेता भी ऋषिदयानन्द के मुख्य उद्देश्य को भूल गए। वास्तविक समस्या तो अब शुरू हुई थी जो भारतीयों के वेश में अंग्रेज भेड़िये राज्य सत्ता पर बैठे हुए थे। समाज हित व विश्वकल्याण तो दूर उन्होंने स्व से इतर कुछ न सूझ रहा था। राज्य सरकारें व राष्ट्रीय सरकार सब एक ही थाली के चट्टे-बट्टे थे।

आर्य समाज के जो थोड़े बहुत नेता बचे थे, तथा अन्यों की अपेक्षा कुछ जागरूक थे तो वो भी अपने स्वार्थ में उलझकर कांग्रेस से चिपक कर सत्तासुख का उपभोग करने लगे। जो आचार्य या सन्त हुए वो अपने आश्रमों में घुस गए। निरीह जनता उसी तरह से लुटती पिटती रही। आर्य समाज जैसे सो गया, हिन्दू-मुसलमान के झगड़े समाप्त हो गए थे। ईसाई मिशनरियाँ धीमे जहर की भाँति धीरे-धीरे अपना दायरा बढ़ा रही थी। कोई सामाजिक प्रहरी नही बना था। सरकार के विरुद्ध आवाज उठाने की किसी में हिम्मत न थी।

विचारवान थे जिनको मानते विचार शून्य हो गए
प्रहरी थे समाज के सजग जो वो सब जाकर सो गए

इन्हीं दिनों हरियाणा के छोटे से गाँव सुण्डाना में एक बालक जवानी की दहलीज पर पाँव रख रहा था। विचारों में मग्न रहता और सुन्दर-सुन्दर स्वप्न देखा करता। उसे दिन में भी स्वप्न दिखाई देते किन्तु जिस स्वप्न को वो देखता उसका रास्ता उसे नहीं मिल पा रहा था। बेचैन हुआ न जाने कहाँ-कहाँ गुरुकुलों आश्रमों व अनेक विद्या केन्द्रों पर घूमता रहा मन की हिलोरें तड़पाती, कितनी चेतना समाज के लिए, कितना विचलित ऋषि दयानन्द के सपनों के भारत को रोजाना मानचित्र पर देखता और उसे वास्तविक रूप किस दिशा से दिया जाए विचारता रहता रास्ता नहीं मिल पा रहा था। साधना की, तपस्या की, अध्ययन-अध्यापन चलता रहा मन में तड़पन बढ़ती गई और विचारों में भी परिपक्वता आने लगी।

विचारवान व्यक्ति विचार करता रहता है किन्तु बाहर से वह शान्त होता है। यह वही स्थिति होती है जब आँधी आती है तो उससे पूर्व बाहर एकदम शान्त वातावरण हो जाता है।

दूसरी तरफ एक और युवा कोलकाता में अध्यापन का कार्य कर रहा है। किन्तु समाज में फैली अन्धविश्वास, कुरीतियों, भ्रष्टाचार और सरकार की तानाशाही, गरीब मजदूर किसान का शोषण देखता है। पूँजीपतियों की ऊँची-2 अट्टालिकाएँ देखता है और फिर गरीबों के झोपड़ों में झाँकता है तो तड़प उठता है, कराहने लगता है। बगावत की लहरे तेज होने लगती हैं किन्तु बगावत कहाँ कैसे किससे करें समझ नहीं आता और तड़पने लगता है।

परमात्मा का संयोग या खेल अद्भुत है। देश के दो दूर-दूर के स्थानों पर एक जैसी चिंगारी बराबर सुलगा रहा है। दोनों त्याग व बलिदान की भट्ठी में अपने आपको जलाने के लिए भस्मीभूत होने के लिए तड़प रहे हैं किन्तु वह परमात्मा हमारा पिता है सच्चा हितैषी है इस कारण सोचता है शायद इनमें कहीं कमी न रह जाए और उन्हें थोड़ा और तपाता है। कुन्दन बनाकर चमकाने के लिए समय आया पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज के निर्देश से वह चिंगारी झज्जर गुरुकुल में तप रही बारूद रूपी जवानी में जा लगी और आग बारूद में

मिली तो पता न लगा कि कब बारूद और आग एक रूप हुए और भयंकर विस्फोट हो गया। उस विस्फोट से इतना भयंकर धमाका हुआ कि सोने वाले आर्य समाजी ही नहीं सरकारें तक काँप गई। वह धमाका था ब्र० इन्द्रदेव मेधार्थी और प्रो० श्यामराव जो स्वामी इन्द्रवेश और अग्निवेश बनकर एक ही ज्वाला के ज्योतिपुञ्ज बनें।

आर्य समाज जो सोई पड़ी थी विचार शून्य हो गई थी उस आर्य समाज ने इन दो चेहरों को देखकर करवट ली और अंगड़ाई लेता हुआ यह समाज फिर उठा और जवानियाँ इन दो मूर्तियों की एक आवाज पर अपने आप को बलिदान करने के लिए लालायित हो उठती और न जाने उस आर्य समाज के नव स्थापना दिवस पर दयानन्द मठ गोहाना रोड़ रोहतक में 7 अप्रैल 1970 ई० में कितने ही नवयुवकों ने यज्ञ की पवित्र वेदी पर राष्ट्र यज्ञ की अग्नि में अपने आपको आहूत करने की प्रतिज्ञाएँ ली। अब तक के इतिहास में ऐसा सुन्दर भव्य और राष्ट्रहित के लिए प्रतिज्ञा दिवस आर्य समाज में कभी नहीं आया।

कहते हैं स्वामी इन्द्रवेश को लोग दूसरा दयानन्द कहा करते थे और हर लिहाज से रहा भी वैसा ही स्वामी दयानन्द को भी अपने ही लोगों ने सताया, तड़पाया, तंग किया और मार दिया उसकी एक न मानी और इस दयानन्द के भक्त युवा हृदय सम्राट स्वामी इन्द्रवेश को जिसे देखने मात्र के लिए दूर-दूर के स्थानों से लोग आया करते थे उसे भी आर्य समाज व अपने ही लोगों की स्वार्थी करतूतों का शिकार होना पड़ा। वह जो भूचाल उठा था आर्य समाज की पावन धरा पर, वह जो तूफान उठा था राष्ट्रभृत यज्ञ की बलिवेदी पर वह जो आँधी आई थी हरियाणा प्रदेश में, उन सबको स्वार्थ व भ्रष्टाचार की गन्दी सोच रखने वाले तथाकथित कुछ समाज नेताओं, कुछ राजनेताओं ने सरल व स्पष्ट जनता रूपी पानी मे आग लगाकर उसे अपना स्वप्न पूर्ण करने से पहले ही शान्त कर दिया।

इस पवित्र और ओजस्वी तेजस्वी आत्मा के दिव्य दर्शन लेखक को हुए किन्तु केवल दो बार पहली बार कुरुक्षेत्र में जब वो आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान बनकर पूरे हरियाणा में वेद प्रचार मण्डलों का गठन कर रहे थे। वहाँ उन्होंने गुरुकुल के आचार्य को लेखक के सामने ही कहा कि गुरुकुल का कुल बजट कितना है? उन्होंने कहा कि लगभग 80 लाख तो स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज की गतिविधि पर इलाके में कितना खर्च कर रहे हैं? आचार्य जी ने कुछ इधर-उधर की बातें घुमाई तो स्वामी जी ने स्पष्ट शब्दों में कहा आचार्य जी गुरुकुल आपका नहीं है। दयानन्द और आर्य समाज का है तथा मैं यहाँ चन्दा लेने नहीं आया हूँ मुझे तो इलाके में गुरुकुल की प्रतिष्ठा आर्य समाज के केन्द्र के रूप में चाहिए। इस प्रचार कार्य के लिए गुरुकुल बजट का 5 या 10 प्रतिशत तो अवश्य खर्च करना चाहिए। इतना बड़ा गुरुकुल है और यहाँ के मुख्य द्वार से 20 गज की दूरी पर भी इसका असर नहीं है तो क्या लाभ इतने बड़े संस्थान को चलाने का। फिर वापसी मे उनके साथ रोहतक तक चले तथा रास्ते मे नीलोखेड़ी आर्य समाज में चल रहे आर.एस.एस. के विद्यालय का झगड़ा और आर्य समाज में संघियों की घुसपैठ का पता चला। पूरा दिन साथ रहने का मौका मिला स्वामी जी आर्य समाज के उत्थान के लिए कितने व्यग्र व चिन्तित थे। यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था। रास्ते में स्वामी जी ने कहा डा० साहब आर्य समाज में आर.एस.एस. वालों ने घुसपैठ कर ली है और अपने वालों को आपस में लड़ाकर इसको रसातल में भेज रहे हैं। अपने लोग इस बात को अभी नहीं पकड़ पा रहे हैं इनको समझाना सबसे कठिन है ये अपने ही अपनों के दुश्मन बनते जा रहे हैं। स्वामी जी ने कहा इसमें हम जैसे न जाने कितने हजारों लोगों की आहुति देनी होगी तब जाकर आर्य समाज बचेगा और लाखों राष्ट्र समर्पित जागरूक युवाओं को अपना बलिदान देना होगा तब जाकर स्वामी दयानन्द के सपनों का आर्य राष्ट्र बन सकेगा। उनके दर्द को देखकर साथी भी तड़प उठे। उनके क्या कोई सन्तान थी या अपना कुटुम्ब था वो तो सर्वस्व राष्ट्रयज्ञ में समर्पित कर चुके थे। दूसरी बार दयानन्द मठ गोहाना रोड़ रोहतक में जब वो अस्वस्थ चल रहे थे। तो सुबह जब लेखक घर से आया तो आते हुए गाय के दूध की लस्सी (मट्ठा) लेता आया स्वामी जी शायद जाने के लिए तैयार थे नमस्ते की तो तुरन्त पहचान गये। यह मुलाकात चार साल के बाद हो रही थी। नमस्ते करते ही कहा आओ डॉक्टर साहब क्या हाल है आपके कुरुक्षेत्र का और कुलवासियों का। कहाँ से आ रहे हैं। बताया कि घर से और थोड़ा सकुचाते हुए कहा कि आप के लिए लस्सी लाया था तो बहुत खुश होकर कहा कि क्या बात है आप को कैसे पता चला कि मैं आज गाय के दूध की लस्सी पीना चाहता था। आपने तो मेरे मन की इच्छा पूरी कर दी और न जाने कितनी सान्त्वना व आशीष दी और बहुत प्रशंसा की। लेखक इतना आश्चर्य चकित व भावविभोर हो रहा था कि इतना बड़ा उच्च व्यक्तित्व मुझ गरीब के घर की लस्सी पीकर इतनी प्रशंसा कर रहे हैं लोग तो किसी के लिए जीवन दाँव पर लगा देते हैं तब भी कोई इतनी विनम्रता और प्यार उसके प्रति नहीं दिखाते और स्मृतिक्षमता गजब थी इतने लम्बे काल के बाद मिलना और पहली मुलाकात में ही पहचानना लोग तो वर्षों साथ रहते हैं और उसे प्रयोग करके फेंक देते है तथा न ही याद रखते हैं और स्वामी जी महाराज युवा को देखते ही बहुत खुश होते थे और उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते थे। उनमें गजब की आकर्षण शक्ति थी। काश! परमात्मा उस महान व्यक्तित्व के विचारों को आर्य समाज व आम साधारण जनता को समझा देता तो निश्चित तौर पर आज फिर से मृत्युशैय्या पर पड़ा आर्य समाज अपने देश ही नहीं विश्व के मानचित्र पर दौड़ लगा रहा होता।

सुयोग्य एवं संस्कारित वधू चाहिए

सम्भ्रान्त आर्य परिवार (जाट – तोमर गोत्र) के 32 वर्षीय युवक श्री अक्षय कुमार जिनकी लम्बाई 6 फुट, रंग–गोरा व स्वस्थ शरीर के हैं। जिनकी शैक्षिक योग्यता बी.टेक है। वर्तमान में बैंक ऑफ बड़ौदा में अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। इनके पूज्य पिता श्री ओमवीर सिंह आर्य भी नेवी में अधिकारी के पद पर कार्यरत हैं।

चि. अक्षय कुमार के लिए सुयोग्य, शिक्षित, स्वस्थ एवं आर्य संस्कारों से ओत–प्रोत वधू की आवश्यकता है। आर्य विचारधारा में निष्ठा रखने वाले परिवारों से विनम्र निवेदन है कि निम्न नम्बरों 7060150375 (श्री ब्रजपाल सिंह आर्य), 9963807933, 8273123677 पर शीघ्र सम्पर्क करें।

आर्य केन्द्रीय सभा, फरीदाबाद तथा महर्षि दयानन्द यज्ञशाला एवं पुस्तकालय, सैक्टर–10 फरीदाबाद के संयुक्त तत्वावधान में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं जन्मोत्सव दिनांक 15 फरवरी, 2026 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में हुए सम्मिलित

आर्य केंद्रीय सभा (पंजीकृत), फरीदाबाद तथा महर्षि दयानन्द यज्ञशाला एवं पुस्तकालय, सैक्टर–10, डी.एल.एफ., फरीदाबाद के संयुक्त तत्वावधान में रविवार दिनांक 15 फरवरी, 2026 को महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं जन्मोत्सव विशाल स्तर पर मनाया गया। उत्सव की अध्यक्षता ब्रह्मचारी श्री राजेन्द्र जी समाजसेवी (सेवा निवृत्त इंजीनियर) ने की। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य वक्ता के रूप में कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त आर्य केन्द्रीय सभा, फरीदाबाद के संरक्षक चौ. राजेन्द्र सिंह बीसला पूर्व विधायक, श्री मदनलाल तनेजा, श्री नन्दलाल कालड़ा, श्री महेशचन्द्र आर्य, डॉ. गजराज सिंह आर्य, श्रीमती विमला ग्रोवर, श्री गिरधारी लाल मित्तल प्रधान आवासीय कल्याण समिति, सैक्टर–10 आदि की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम में आचार्य सतीश सत्यम एवं आचार्य धर्मवीर शास्त्री की भजन मण्डली द्वारा भजनों का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, वहीं यज्ञ ब्रह्मा पद को श्री मनुदेव शास्त्री एवं डॉ. हरिओम शास्त्री ने सुशोभित किया।

प्रातः 9 से 10.30 बजे तक यज्ञ का अनुष्ठान किया गया जिसमें गणमान्य परिवारों ने यजमान के रूप में सम्मिलित होकर आहुतियाँ प्रदान की। यज्ञ के उपरान्त उत्सव का विधिवत कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। श्री धर्मवीर शास्त्री के भजनों के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी ने अपना ओजस्वी उद्‌बोधन दिया।

स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म यद्यपि 12 फरवरी को हुआ था किन्तु उनका दूसरा जन्म शिवरात्रि के दिन तब हुआ जब उनके हृदय में सच्चे शिव की तलाश करने की जिज्ञासा जगी। इसीलिए शिवरात्रि को महर्षि दयानन्द बोध दिवस के रूप में मनाया जाता है। स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द जी को समग्र क्रांति का योद्धा बताया और कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में प्रचलित अवैदिक मान्यताओं एवं सिद्धान्तों के विरुद्ध शंखनाद किया था। महाभारत के बाद महर्षि दयानन्द ही पहले महापुरुष थे जिन्होंने संसार के लोगों का आह्‌वान किया था कि वेदों की ओर लौटो। विदित हो कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुरु विरजानन्द जी से शिक्षा पूरी होने के उपरान्त जब दीक्षा ली तो एक संकल्प किया था कि वे वैदिक सिद्धान्तों के साथ जीवन में किसी भी स्थिति में समझौता नहीं करेंगे, शेष पृष्ठ 7 पर

आर्य केन्द्रीय सभा, करनाल द्वारा आयोजित महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव एवं वैदिक चेतना अभियान भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द के कार्यों की छाप हर क्षेत्र में दिखाई देती है – स्वामी आर्यवेश

जन्मोत्सव पर करनाल में भव्य शोभा यात्रा एवं वैचारिक चेतना का संकल्प

आर्य केन्द्रीय सभा, करनाल द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव एवं वैदिक चेतना अभियान के अंतर्गत 11 से 15 फरवरी, 2026 तक विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसी श्रृंखला में भव्य शोभायात्रा एवं वैचारिक सभा का आयोजन अत्यंत उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ ध्वजारोहण के साथ किया गया। स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य मे ध्वजारोहण श्री सतेन्द्र मोहन कुमार ने किया। ध्वजारोहण के पश्चात् शोभा यात्रा का शुभारंभ सेक्टर–6 स्थित शिव मंदिर प्रांगण से विधिवत वैदिक मंत्रोच्चार के साथ किया गया। केन्द्रीय सभा के प्रधान प्रो. आंनद सिंह, मंत्री श्री स्वतंत्र कुकरेजा, वरिष्ठ आर्यनेता श्री लाजपत राय चौधरी ने यात्रा कि अगुवाई की। यात्रा सेक्टर–7 के प्रमुख मार्गों से होती हुई सेक्टर–8 (आर्य समाज वाजिदपुर क्षेत्र) तक पहुँची। यात्रा का विभिन्न स्थलों पर स्थानीय नागरिकों एवं आर्य समाज के सदस्यों द्वारा पुष्पवर्षा कर स्वागत किया गया तथा फल एवं प्रसाद का वितरण किया गया। यात्रा के शुभारंभ अवसर पर पंडित संकल्प भंडारी, चेयरमैन मेवा भंडारी, श्री विपिन अरोड़ा, श्री हरपाल अरोड़ा एवं श्री राकेश शर्मा प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। सेक्टर–7 में स्वर्गीय श्री प्रदीप मुनि के सुपुत्र एवं खुराना परिवार द्वारा यात्रा का स्वागत किया गया। सेक्टर–8 में आर्य समाज वाजिदपुर के श्री रैगन आर्य, श्री रामकुमार आर्य एवं श्री अनिल आर्य सहित अन्य कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाई। शोभा यात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से होकर निकली। यात्रा के दौरान वैदिक भजन, वैदिक जयघोष एवं राष्ट्रजागरण के संदेशों से वातावरण आध्यात्मिक और राष्ट्र भावना से ओत–प्रोत हो उठा।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में पधारे सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रेरणादायी उद्‌बोधन में कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कार्यों की अमिट छाप समाज में दृष्टिगोचर होती है। उन्होंने बताया कि महर्षि दयानन्द जी ने केवल धार्मिक कुरीतियों, अंधविश्वासों और पाखंड का खंडन ही नहीं किया, बल्कि समाज को तर्क, सत्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित चिन्तन की नई दिशा प्रदान की। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने भारतीय समाज में आत्मविश्वास,

स्वाभिमान और जागरूकता की ज्योति प्रज्वलित की। महर्षि जी ने शिक्षा को सामाजिक उत्थान का मूल आधार मानते हुए स्त्री–शिक्षा, समानता और राष्ट्रप्रेम का सशक्त संदेश दिया। उनके विचारों ने लोगों की मानसिकता को बदलने का कार्य किया और समाज को आत्मनिर्भर तथा जागरूक बनने की प्रेरणा दी। अंत में स्वामी जी ने आह्‌वान किया कि वर्तमान समय की चुनौतियों का समाधान महर्षि दयानन्द जी के आदर्शों में निहित है। अतः हम सभी का दायित्व है कि महर्षि के विचारों को जन–जन तक पहुँचाएं और उन्हें अपने जीवन में आत्मसात कर राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएँ।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि वर्तमान समय में समाज अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे समय में ऋषि दयानन्द के विचार मार्गदर्शक प्रकाश स्तंभ के समान हैं। उन्होंने कहा कि युवाओं को विशेष रूप से ऋषि दयानन्द के जीवन, उनके साहस और उनके सुधारवादी दृष्टिकोण से प्रेरणा लेकर जन–जागरण का कार्य करना चाहिए। वैदिक सिद्धांतों के प्रचार–प्रसार के बिना सामाजिक परिवर्तन संभव नहीं है।

उत्तराखंड सरकार के पूर्व मंत्री स्वामी यतीश्वरानन्द जी ने अपने संबोधन में कहा कि ऋषि दयानन्द जी आधुनिक भारत के महान दार्शनिक थे। महर्षि ने भारतीय समाज को आत्म चिन्तन का अवसर दिया और उसे वैदिक ज्ञान की ओर पुनः उन्मुख करने का कार्य किया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द जी का चिन्तन केवल एक धार्मिक आंदोलन नहीं था, बल्कि वह राष्ट्रीय पुनर्जागरण का आधार बना। आज आवश्यकता है कि हम उनके विचारों को समकालीन संदर्भों में समझें और अपनाएँ।

कार्यक्रम में विभिन्न संत–महात्माओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं आर्य समाज के पदाधिकारियों ने भी अपने विचार व्यक्त किए। शोभायात्रा के दौरान युवाओं द्वारा योग एवं व्यायाम प्रदर्शन किया गया, जिसने अनुशासन और उत्साह का प्रेरक दृश्य प्रस्तुत किया। नगर के विभिन्न स्थानों पर पुष्पवर्षा कर शोभायात्रा का स्वागत किया गया।

समापन अवसर पर उपस्थित अतिथियों का सम्मान किया गया और समाज में वैदिक विचारधारा के व्यापक प्रसार का संकल्प लिया गया। यह आयोजन महर्षि दयानन्द के आदर्शों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ–साथ समाज को वैचारिक रूप से जागृत करने का सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ।

इस अवसर पर श्री देशराज सवंदिया, श्री शांति प्रकाश आर्य, एडवोकेट श्री विजय पाल, ठाकुर श्री वीर सिंह, श्री रजनीश कौशिक, श्री अरुण आर्य, श्री विनोद आर्य सहित विभिन्न आर्य संस्थाओं के पदाधिकारी एवं गणमान्य नागरिक भी उपस्थित रहे। सभी ने महर्षि दयानन्द के विचारों को समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचाने का संकल्प दोहराया। कार्यक्रम भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

आर्य केन्द्रीय सभा, गाजियाबाद के तत्त्वावधान में महाशिवरात्रि पर्व एवं ऋषि बोधोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया

आर्य नेता श्री श्रद्धानन्द शर्मा ने समारोह की अध्यक्षता की

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि रहे

स्वामी आदित्यवेश जी एवं आचार्य कृष्णमुनि जी का विशेष उद्बोधन हुआ

आर्य केन्द्रीय सभा, गाजियाबाद के तत्त्वावधान में महाशिवरात्रि पर्व एवं ऋषि बोधोत्सव रविवार 15 फरवरी, 2026 को अपरान्ह 2.30 से 5.30 बजे तक आर्य समाज मंदिर, राजनगर, गाजियाबाद में समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर महाशिवरात्रि पर्व एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन से सम्बन्धित वैदिक विद्वानों के सारगर्भित एवं प्रेरित उद्बोधन हुए। समारोह की अध्यक्षता वयोवृद्ध आर्यनेता श्री श्रद्धानन्द शर्मा ने की और मंच का कुशल संचालन आर्य केन्द्रीय सभा के मंत्री श्री नरेन्द्र कुमार पांचाल ने किया। आयोजन की व्यवस्था का दायित्व श्री सत्यवीर चौधरी प्रधान एवं श्री सन्तलाल मिश्रा कोषाध्यक्ष आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद ने संभाला। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम में सम्मिलित हुए और उनके अतिरिक्त तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आदित्यवेश जी व वैदिक विद्वान् आचार्य कृष्णमुनि जी वानप्रस्थ, कोषाध्यक्ष जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, गाजियाबाद के ओजस्वी उद्बोधन हुए। श्री कुलदीप विद्यार्थी बिजनौर ने भजनों के द्वारा महर्षि की महिमा सुनाई। कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष श्री ओम प्रकाश आर्य विशिष्ट अतिथि डॉ. वीरेन्द्रनाथ सरदाना प्रधान आर्य समाज राजनगर, श्री कृष्ण कुमार यादव मंत्री आर्य समाज वृन्दावन आगरा, श्री चमन सिंह आर्य प्रधान आर्य समाज मुरादनगर, श्री कृष्णदेव आर्य, श्रीमती पूनम चौधरी प्रधान आर्य समाज गोविन्दपुरम, श्री प्रमोद चौधरी, श्री प्रवीण आर्य प्रान्तीय संचालक केन्द्रीय युवक परिषद्, श्री चतर सिंह सूर्यवंशी दयानन्द मठ चम्बा, हिमाचल, आचार्य जितेन्द्र जी संन्यास आश्रम गाजियाबाद, श्री राजपाल तोमर, श्री गौरव सिंह आर्य आदि की भी गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री कुलदीप विद्यार्थी के भजनों से हुआ उसके पश्चात् आचार्य कृष्णमुनि वानप्रस्थी का सारगर्भित प्रवचन सुनने को मिला। उन्होंने महर्षि दयानन्द जी की बचपन से लेकर स्वामी बिरजानन्द जी की कुटी तक पहुंचने की कहानी को बहुत ही सुन्दर एवं प्रभावशाली शब्दों में प्रस्तुत किया। महर्षि दयानन्द जी के तप, तेज और त्याग के अनेक संस्मरण उन्होंने सुनाये।

विशिष्ट वक्ता स्वामी आदित्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द जी को समझने के लिए आर्य समाज की उपलब्धियों और क्रांतिकारी इतिहास को जानना आवश्यक है। उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन से लेकर हैदराबाद आन्दोलन, हिन्दी आन्दोलन, सती प्रथा विरोधी अभियान, शराबबन्दी आन्दोलन और बेटी बचाओ, देश बचाओ अभियान को आर्य समाज की विशेष उपलब्धियाँ बताई। उन्होंने कहा कि जब कोई सोच भी नहीं सकता था कि महिलाओं को पढ़ने का अधिकार मिलेगा, अछूतों और दलितों को सम्मान मिलेगा, सबको शिक्षा का अधिकार मिलेगा और देश की परतंत्रता की बेड़ियां टूटेंगी उस समय महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायियों ने इन मुद्दों पर पूरी राष्ट्र की आत्मा को जगाया और समाज की रूढ़ियों और जड़ताओं तथा विविधि अन्धविश्वासों के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलाया।

आर्य समाज से भिन्न अनेक इतिहासकारों और विद्वानों ने भी आर्य समाज के इस तेजस्वी आन्दोलनकारी स्वरूप को स्वीकारते हुए अपनी प्रतिक्रियाएं व्यक्त की हैं। एक अंग्रेज लेखक ने कहा था कि जहां–जहां आर्य समाज है वहीं–वहीं विद्रोह की आग है। आर्य समाज चाहे धार्मिक कार्य करे या कोई सामाजिक अभियान चलाये उसके पीछे विदेशी शासन की गुलामी के विरुद्ध बगावत की भावना अवश्य होती है। आर्य समाज के प्रारम्भ के समय ही सुदूर अमेरिका में बैठे एक विद्वान् एन्ड्रू जैक्शन डेविस ने कहा था कि मुझे एक आग दिखाई देती है जो भारत से सुलगी है और वह एशिया तथा यूरोप को पार करते हुए दुनिया के विभिन्न महाद्वीपों में फैलती जा रही है जो धार्मिक अन्धविश्वास, पाखण्ड, सामाजिक अन्याय, आर्थिक शोषण एवं राजनीतिक दासता के विरुद्ध जन–चेतना का कार्य कर रही है उस आग का नाम – आर्य समाज है। स्वामी आदित्यवेश जी ने उपस्थित जन–समूह का आह्वान किया कि आज आर्य समाज की ओर बहुत सारे लोगों की दृष्टि लगी हुई है, कुछ कुत्सित प्रयास आर्य समाज को नजर अंदाज कर अपनी संकीर्ण और साम्प्रदायिक मानसिका को समाज पर थोपना चाहती हैं, किन्तु आर्य समाज का यह दायित्व है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्वारा दिखाये गये वैदिक पथ को प्रशस्त करे। वेद से ही मानव मात्र को विश्व शांति की ओर लाया जा सकता है। साम्प्रदायिक विद्वेष, जातीय घृणा एवं नफरत एवं आर्थिक गैर बराबरी आदि समस्याएं आज चुनौती के रूप में हमारे समक्ष मुंह बाये खड़ी हैं। ऐसे में आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्ता की जिम्मेदारी है कि आज महर्षि के बोध दिवस पर हम संकल्प करें कि हम महर्षि दयानन्द जी के बताये गये रास्ते पर चलते हुए पूरे संसार में वैदिक सिद्धान्तों को फैलायेंगे और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का लक्ष्य अवश्य पूरा करेंगे।

मुख्य अतिथि स्वामी आर्यवेश जी ने महर्षि दयानन्द जी की मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे महान् दार्शनिक, महान् वेदज्ञ, महान् योगी, महान् राष्ट्रभक्त, महान् राष्ट्रवादी, महान् अछूतोद्धारक, महान् स्त्री उपकारक, महान् शिक्षाविद्, महान् हिन्दी प्रचारक, महान् समाज सुधारक, महान् क्रांतिकारी, महान् निर्भीक आदि थे। अपने गुरु स्वामी बिरजानन्द जी की प्रेरणा से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने संकल्प किया था कि वे आजीवन वैदिक सिद्धान्तों एवं मान्यताओं का प्रचार करेंगे और अवैदिक मान्यताओं से कभी भी किसी स्थिति में समझौता नहीं करेंगे। निःसंदेह उन्होंने अपनी इस प्रतिज्ञा को जीवन की आखिरी श्वांस तक निष्ठा के साथ निभाया। उनके सामने अनेक बार ऐसे अवसर और प्रलोभन आये जिन्हें उन्होंने ठुकराकर अपनी प्रतिज्ञा के अनुरूप वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा की। महर्षि दयानन्द जी एक निर्भीक संन्यासी थे। उन्होंने किसी भी प्रकार के भय एवं प्रलोभन को स्वीकार नहीं किया। अंग्रेजों के द्वारा उन्हें राजद्रोह के मुकदमें में जेल भिजवाने की धमकी देने पर महर्षि जी ने कहा था कि यदि मुझे सत्य कहने के कारण तोप के मुंह से बांधकर मेरे शरीर के टुकड़े–टुकड़े कर दिये जायें तो भी मैं पीछे नहीं हटूँगा। इसी तरह से उनके जीवन की अनेक घटनाएं हैं जो उनकी निर्भीकता का परिचय देते हैं। वर्तमान समय में महर्षि दयानन्द जी और आर्य समाज पहले से भी अधिक प्रासंगिक दिखाई देते हैं। आज जिस दिशा में समाज एवं राष्ट्र जा रहा है वह अत्यन्त भयावह है। इसके रोकने के लिए आर्य समाज ही एक मात्र आशा की किरण दिखाई देता है। अतः अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए प्रत्येक आर्यजन राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं के विरुद्ध आम जनता का न केवल सहयोग करें, बल्कि नेतृत्व करें। आज ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर हम सभी को यही संकल्प लेना चाहिए।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री श्रद्धानन्द शर्मा जी ने महर्षि दयानन्द जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें महान् समाज सुधारक और महान् क्रांतिकारी संन्यासी बताया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द जी के व्यक्तित्व में गम्भीरता, धैर्य, तप एवं तेज देखते ही बनता था। वे समाज की हर समस्या पर गम्भीर चिन्तन करते थे और उसके निदान के लिए अपने मौलिक विचार लोगों के बीच रखते थे। यदि महर्षि दयानन्द जी की प्रेरणा देश के क्रांतिकारियों को नहीं मिलती तो आजादी का इतिहास क्रांतिकारियों से शून्य हो जाता। यह महर्षि की प्रेरणा ही थी कि सैकड़ों, हजारों क्रांतिकारी आर्य समाज से प्रेरित होकर राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति दे गये।

कार्यक्रम के अन्त में आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री सत्यवीर चौधरी ने सभी आगन्तुक विद्वानों और उपस्थित आर्यजनों का आभार व्यक्त किया। शांति पाठ के पश्चात् कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

अमेरिका से पधारे श्री नितिन गुप्ता एवं श्रीमती गीता गुप्ता का स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम में किया गया भव्य स्वागत

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या का मनाया गया जन्मोत्सव

गत् 14 फरवरी, 2026 को स्वामी इन्द्रवेश विद्या पीठ आश्रम में बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक एवं सार्वदेशिक आर्या युवती परिषद्की प्रधान बहन प्रवेश आर्या का जन्मोत्सव समारोह उल्लास के साथ मनाया गया।

इस अवसर पर अमेरिका से पधारे श्री नितिन गुप्ता उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गीता गुप्ता, उनकी सुपुत्री कुमारी प्रेरणा एवं कुमारी परी तथा श्री नितिन जी की बहन श्रीमती रेनू का भव्य स्वागत किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ भव्य यज्ञशाला में यज्ञ के द्वारा हुआ। यज्ञ के उपरान्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की गरिमामयी उपस्थति में सम्मान समारोह प्रारम्भ हुआ। उपस्थित आर्य साधिका मण्डल की सभी सदस्य बहनों एवं अन्य

बताया कि उन्होंने Ved Initiative अर्थात् वैल्यू एज्युकेशन डेवलपमेंट इनेस्टिव प्रारम्भ किया है जिसके द्वारा नैतिक शिक्षा एवं सेवा के कार्यो को सहयोग करेंगी। उन्होंने बताया कि इस सेवा प्रकल्प के लिए उनके द्वारा अमेरिका में चलाई जा रही संध्या प्रशिक्षण से प्राप्त धनराशि को इस सेवा प्रकल्प में व्यय करने का संकल्प किया है। उनकी छोटी सुपुत्री कुमारी परी ने भी अपना संकल्प व्यक्त किया और कहा कि वे भी अपने व्यक्तिगत प्रयास से इस कार्य में आर्थिक सहयोग किया करेंगी।

अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने जहां गुप्ता परिवार की मुक्त कंठ से प्रशंसा की और बताया कि

अगले पृष्ठ पर जारी

पृष्ठ 5 का शेष

अमेरिका से पधारे श्री नितिन गुप्ता एवं श्रीमती गीता गुप्ता का स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम में किया गया भव्य स्वागत

अमेरिका में वेस्ट चैसर आर्य समाज की पूर्व प्रधाना बहन गीता गुप्ता जी उनके पतिदेव श्री नितिन गुप्ता जी एवं उनको दोनों बेटियां आर्य समाज के कार्य में बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं और सामाजिक कार्यों के लिए दिल खोलकर सहयोग करते हैं। स्वामी जी ने बहन प्रवेश आर्या जी को अपनी शुभकामनाएं और बधाई देते हुए कहा कि बहन जी लाखों बहन–बेटियों की प्रेरणा स्रोत हैं। इन्होंने जीवन की सभी ऐषणाओं को समाप्त कर सम्पूर्ण जीवन बेटी बचाओ अभियान के माध्यम से बेटियों के सम्मान एवं नारी जाति की सशक्तिकरण के लिए समर्पित किया हुआ है। बहन जी का व्यक्तित्व निःसंदेह विविध गुणों से सम्पन्न एवं नेतृत्व के गुणों से ओत–प्रोत है। वेद दिन और रात सामाजिक कार्यों में संलग्न रहती हैं। आज सम्पूर्ण आर्य जगत में बहन प्रवेश आर्या तथा बहन पूनम आर्या का नाम किसी परिचय का मोहताज नहीं है। उनके जीवन की सात्विकता, आध्यात्मिकता, सामाजिकता एवं सक्रियता के प्रभाव से हजारों बहनें उनके मिशन से जुड़ चुकी हैं। हजारों–हजारों बेटियों के आवासीय योग साधना एवं चरित्र निर्माण शिविर आयोजित करना उनकी मुख्य कार्यशैली है। स्वामी जी ने इस अवसर पर बहन प्रवेश आर्या जी के उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायुष्य एवं यशस्वी जीवन की कामना करते हुए उन्हें अपनी शुभकामनाएँ दी। कार्यक्रम के उपरान्त सुमधुर भोजन की व्यवस्था की गई थी। कार्यक्रम में आर्य साधिका मण्डल, टिटौली की संयोजक बहन पूनम आर्या, श्रीमती कविता आर्या, श्रीमती नीलम, श्रीमती बविता, श्रीमती प्रीति आर्या, श्रीमती शीला आर्या आदि के अतिरिक्त श्री पाणिनी आर्य, श्री महासिंह आर्य, श्री जिले सिंह आर्य आदि की उपस्थिति रही। इनके अतिरिक्त बहन प्रवेश आर्या के पूज्य पिता जी मास्टर नफे सिंह के अतिरिक्त परिवार के अन्य सदस्यों में कर्नल आर. के. सिंह, डी.एस.पी. अर्जन सिंह, श्री प्रदीप कुमार, श्रीमती शकुन्तला, श्रीमती कृष्णा, श्रीमती प्रभा देवी, श्रीमती सुमन, श्रीमती कविता, श्रीमती रीमा, श्री दीपक आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। बहन पूनम आर्या जी के संयोजन में यज्ञ की व्यवस्था कुमारी किरण आर्या, कुमारी पूजा, कुमारी शक्ति, कुमारी पूनम, कुमारी प्रेक्षा, कुमारी अक्षिमा, कुमारी आव्या आदि ने यज्ञ की व्यवस्था की। स्वामी मुक्तिवेश जी एवं श्री अजयपाल आर्य ने भोजन की समुचित व्यवस्था का दायित्व संभाला। कार्यक्रम बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ।

कुमारी प्रेरणा गुप्ता द्वारा संचालित वेद इनीसिएटिव की ओर से विश्ववारा कन्या गुरुकुल रूड़की की छात्राओं को ट्रैक शूट वितरित किये गये

पद्मश्री डॉ. सुकामा आचार्या ने धन्यवाद ज्ञापित किया

दिनांक 14 फरवरी, 2026 को अमेरिका से पधारे श्री नितिन गुप्ता एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गीता गुप्ता एवं उनकी सुपुत्रियों एवं उनकी बहन द्वारा विश्ववारा कन्या गुरुकुल रूड़की में गुरुकुल में छात्राओं को वेद इनेसिएटिव की ओर से ट्रैक शूट वितरित किये गये। ये ट्रैक शूट लगभग एक लाख रुपये से तैयार कराकर छात्राओं में बांटे गये। ट्रैक शूट वेद इनीसिएटिव की संचालक कुमारी प्रेरणा गुप्ता के कर–कमलों से वितरित कराये गये। इस अवसर गुरुकुल की छात्राओं ने वेद मंत्रों से मंगलाचरण करके आगन्तुक सभी अतिथियों को स्वागत किया और बहुत सुन्दर गीत भी प्रस्तुत किये। इस अवसर पर गुरुकुल की संचालक एवं आचार्या पद्मश्री डॉ. सुकामा आचार्या ने कार्यक्रम में उपस्थिति सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्ष एवं संयोजक बहन पूमन एवं प्रवेश आर्या एवं गुप्ता परिवार का हार्दिक धन्यवाद किया और कुमारी प्रेरणा गुप्ता एवं कुमारी परी को आशीर्वाद देते हुए उनकी मुक्त कंठ से प्रशंसा की और उनके यशस्वी जीवन के लिए प्रभु से प्रार्थना की।

कुमारी प्रेरणा ने बड़ी कक्षाओं की छात्राओं से भी वार्तालाप किया और अपने सेवा प्रकल्प के बारे में विस्तार से बताया और उन्हें ऐसी सेवा की गतिविधियों के लिए प्रेरित किया।

मनुष्य की चेतना को जगाना ही सबसे बड़ा रचनात्मक कार्य है – आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री

यज्ञ संसार की नाभि है – 51 कुंडीय महायज्ञ में विज्ञान, संस्कृति और साधाना का संगम

51 कुंड, 51 ब्रह्मचारिणियाँ और 51 युगल – वैदिक चेतना से जाग्रत हुआ विराट हिंदू महासम्मेलन

विराट हिंदू महासम्मेलन के पावन अवसर पर अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान, अध्यात्म पथ के संपादक एवं सनातन चिंतन के प्रखर प्रवक्ता आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में दिल्ली के डी.एल.एफ. कैपिटल ग्रीन्स, मोतीनगर में 51 कुंडीय महायज्ञ अत्यंत भव्यता, अनुशासन और दिव्यता के साथ संपन्न हुआ। इस विराट यज्ञ में 51 जोड़ों ने पारंपरिक भारतीय वेशभूषा में विधिवत यज्ञ अनुष्ठान किया, वहीं कन्या गुरुकुल लोवाकलां की 51 ब्रह्मचारिणी कन्याओं द्वारा किया गया सस्वर वैदिक मंत्रोच्चार संपूर्ण परिसर को आध्यात्मिक ऊर्जा, श्रद्धा और साधना से ओतप्रोत करता रहा।

महायज्ञ को संबोधित करते हुए आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी ने कहा कि यज्ञ संसार की नाभि है। उन्होंने स्पष्ट किया कि यज्ञ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जीवन, समाज, प्रकृति और चेतना के संतुलन का मूल आधार है। यज्ञ की भावना मनुष्य को स्वार्थ से परमार्थ, संग्रह से त्याग और उपभोग से सहभागिता की ओर ले जाती है। उन्होंने बताया कि पाँच महायज्ञ – ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, बलिवैश्वदेवयज्ञ और अतिथियज्ञ के माध्यम से व्यक्ति से लेकर परिवार, समाज, राष्ट्र और संपूर्ण विश्व का कल्याण सुनिश्चित होता है।

यज्ञ की वैज्ञानिक प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए आचार्य शास्त्री जी ने कहा कि यज्ञ में प्रयुक्त घृत, समिधा और औषधीय जड़ी–बूटियाँ केवल आस्था का विषय नहीं, बल्कि पूर्णतः विज्ञान सम्मत प्रयोग हैं। हवन सामग्री में प्रयुक्त नीम, गूगल, पीपल, बरगद, तुलसी, ब्राह्मी, अश्वगंधा, कपूर और चंदन जैसी औषधियाँ जब अग्नि में आहुत की जाती हैं, तो उनसे उत्पन्न वाष्प वायुमंडल में मौजूद हानिकारक जीवाणुओं और विषाणुओं को निष्क्रिय करने में सहायक होती हैं। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि आधुनिक वैज्ञानिक शोधों में यह स्वीकार किया गया है कि यज्ञ से उत्पन्न धूम्र में एंटी–बैक्टीरियल एवं एंटी–वायरल गुण पाए जाते हैं, जो वायु शुद्धिकरण के साथ–साथ मानसिक तनाव को कम करने में भी सहायक सिद्ध होते हैं।

आचार्य जी ने कहा कि आज का विश्व प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, मानसिक अशांति और सामाजिक विघटन जैसी गंभीर चुनौतियों से गुजर रहा है। ऐसे समय में यज्ञ एक समग्र समाधान प्रस्तुत करता है, जो पर्यावरण की शुद्धि के साथ मानव मन को सकारात्मक ऊर्जा और संतुलन प्रदान करता है। उन्होंने कहा – शरीर की शुद्धि के लिए स्नान, मन की शुद्धि के लिए ध्यान, संपत्ति की शुद्धि के लिए दान और पर्यावरण की शुद्धि के लिए यज्ञ अनिवार्य है।

महायज्ञ के पश्चात भव्य शोभायात्रा, सांस्कृतिक कार्यक्रम, चित्रकला प्रतियोगिता, भक्ति भजनों तथा समाज के विशिष्ट महानुभावों के प्रेरक उद्बोधनों का आयोजन हुआ, जिससे यह आयोजन केवल धार्मिक न रहकर सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना का उत्सव बन गया। कार्यक्रम के अंत में सभी श्रद्धालुओं के लिए भोजन प्रसाद की समुचित व्यवस्था की गई।

इस विराट आयोजन को सफल स्वरूप प्रदान करने में विराट हिंदू महासम्मेलन समिति एवं कैपिटल ग्रीन्स परिवार का विशेष योगदान रहा। आयोजन की वैचारिक दिशा, अनुशासन और व्यवस्थाओं में श्री धर्मवीर आचार्य, श्री मुकुल किशोर एवं श्री ज्योति कुमार भाटिया, श्री जयसिंह, श्री सुभाष नागपाल, श्रीमती दिव्या खन्ना एवं मार्गदर्शकों की भूमिका उल्लेखनीय रही, जिन्होंने यज्ञ को केवल कर्मकांड नहीं, बल्कि समाज जागरण और चेतना निर्माण का सशक्त माध्यम बनाया।

कार्यक्रम के समापन पर आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री जी ने शांति पाठ कराया और समाज को एकता, सद्भाव और नैतिकता का संदेश देते हुए उद्घोष किया – एक बनेंगे, नेक बनेंगे। यज्ञ की अग्नि के साथ उठता यह संदेश जन–जन के हृदय में संस्कृति, चेतना और राष्ट्रबोध की ज्योति प्रज्वलित करता हुआ दूर तक गूंजता रहा।

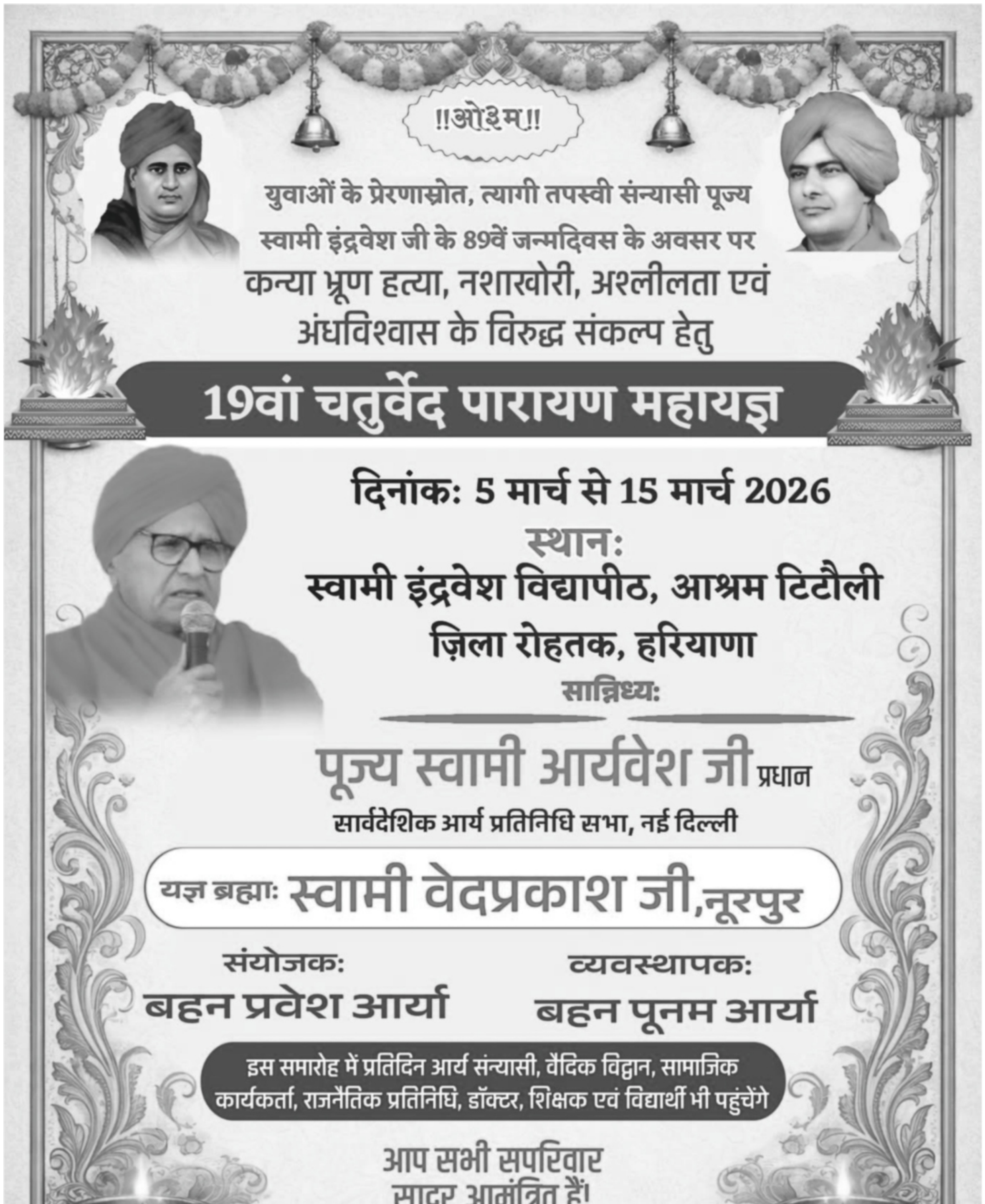

पृष्ठ 4 का शेष

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव एवं जन्मोत्सव दिनांक 15 फरवरी, 2026 को भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

जिसे उन्होंने आजीवन निभाया। महर्षि की स्पष्ट धारणा थी कि ईश्वरीय ज्ञान वेद ही संसार में प्रचलित विचारधाराओं को परखने का पैमाना हो सकता है। क्योंकि वेद सृष्टि के प्रारम्भ से मानव मात्र के कल्याण और उपकार के लिए परमात्मा का दिया हुआ ज्ञान है जिसमें कोई त्रुटि नहीं हो सकती। वेद में किसी भी प्रकार की संकीर्णता नहीं है और न ही भौगोलिक दृष्टि से किसी स्थान अथवा देश विशेष के लिए यह ज्ञान परमात्मा ने दिया है, न ही वेद में इतिहास है। वेद सदैव सत्य और न्याय का संदेश देता है। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द जी दुनिया के सबसे बड़े दार्शनिक थे जिन्होंने त्रैतवाद के वैदिक सिद्धान्त को दुनिया के सामने प्रस्तुत किया और इसे प्रतिष्ठित करने के लिए अनेक शास्त्रार्थ किये। महर्षि दयानन्द जी अनिवार्य शिक्षा, समान शिक्षा एवं निःशुल्क शिक्षा के प्रबल पक्षधर थे। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' में कहा है कि यह राजनियम और जाति नियम होना चाहिए कि प्रत्येक बालक विद्यालय में जाये अर्थात् शिक्षा प्रत्येक बालक के लिए अनिवार्य होनी चाहिए। महर्षि इस सम्बन्ध में माता–पिता के लिए भी कहते हैं कि – 'माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः।' अर्थात् वे माता–पिता जो अपने बच्चों को पढ़ाते नहीं वे उनके शत्रु और वैरी हैं। शिक्षा में समानता के लिए महर्षि दयानन्द जी कहते हैं कि चाहे कोई राजकुमार हो अथवा राजकुमारी, चाहे दरिद्र की सन्तान हो सबको तुल्य वस्त्र, खान–पान और आसन मिलने चाहिए। इसका तात्पर्य यही है कि गरीब–अमीर, राजा और रंक सभी के बच्चे एक समान विद्यालयों में पढ़ें और उन्हें आवास, भोजन, पुस्तकें एवं अन्य सुविधाएँ समान रूप से उपलब्ध कराई जाये। इस व्यवस्था का दायित्व राजकीय कोष से होना चाहिए। अर्थात् शिक्षा व्यवस्था निःशुल्क होनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द जी ने जन्म के आधार पर ऊँच–नीच अर्थात् जन्मना जाति प्रथा को पूरी तरह नकारते हुए कहा कि व्यक्ति के स्तर की पहचान जन्म के आधार पर नहीं बल्कि गुण, कर्म, स्वभाव और योग्यता के आधार पर होनी चाहिए। यदि ऐसा होगा तो समाज में निरन्तर बढ़ते हुए जातीय विद्वेष एवं सामाजिक अन्याय समाप्त होगा और समाज की सर्वतोमुखी उन्नति होगी।

महर्षि दयानन्द जी ने स्त्री शिक्षा की वकालत की और सती प्रथा, देवदासी प्रथा, बाल विवाह आदि सामाजिक कुरीतियों का जोरदार खण्डन किया। उन्होंने विधवा विवाह का रास्ता महिलाओं के लिए खोलने पर बल दिया।

महर्षि दयानन्द जी गुजरात प्राप्त में जन्म होने के बावजूद इस बात को भली प्रकार से समझते थे कि देश की अधिकतम जनता जिस आर्य भाषा हिन्दी को जानती व समझती है उसी भाषा को आदान–प्रदान का मुख्य आधार बनाया जाना चाहिए। अतः उन्होंने प्रारम्भ में संस्कृत और बाद में हिन्दी भाषा में ही अपने व्याख्यान एवं पुस्तक आदि लेखन का कार्य किया। महर्षि दयानन्द महान् वेदज्ञ थे। उन्होंने षड्यन्त्रकारी द्वारा किये जा रहे वेद भाष्य की त्रुटियों को देखकर निश्चय किया कि वेदों का सही भाष्य किया जाना आवश्यक है और इसके लिए उन्होंने जहाँ 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' पुस्तक लिखी वहीं सम्पूर्ण यजुर्वेद तथा ऋग्वेद के 7 मण्डलों का भाष्य किया। दुर्भाग्य की बात है कि वेदों का सम्पूर्ण भाष्य नहीं कर पाये। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी प्रखर राष्ट्रवादी थे। उन्होंने देश की गुलामी को चुनौती देने के लिए अनेक क्रांतिकारी वीरों को प्रेरित किया और स्वयं भी समय–समय पर अपनी लेखनी द्वारा और प्रवचनों के माध्यम से स्वराज्य की बात उठाई।

कर्नल नॉर्थ ब्रुक से हुई वार्ता में महर्षि दयानन्द जी ने निर्भीकता से घोषित किया था कि विदेशी राजा कितना ही अच्छा हो, भले ही वह माता–पिता के समान व्यवहार करे, तो भी स्वदेशी राजा से अच्छा कदापि नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द जी के प्रेरणा से स्वामी श्रद्धानन्द जी, श्यामजीकृष्ण वर्मा, भाई परमानन्द, शहीदे आजम भगत सिंह के दाता सरदार अर्जुन सिंह (जिन्होंने महर्षि दयानन्द जी से यज्ञोपवीत लिया और दैनिक यज्ञ करने की प्रतिज्ञा की थी), सरदार किशन सिंह, सरदार अजीत सिंह, लाला लाजपत राय और कालान्तर में उनके विचारों से प्रेरित होकर शहीदे आजम भगत सिंह, अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह, राजेन्द्र सिंह लाहिड़ी, अशफाक उल्ला खां, चन्द्रशेखर आजाद, शहीद सुखदेव, लाला हरदयाल सरीखे अनेक क्रांतिकारी स्वतंत्रता आन्दोलन में सर्वात्मना समर्पित हुए थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का बहुआयामी व्यक्तित्व था। उन्होंने राजनीतिक क्षेत्र में परतंत्रता के विरुद्ध शंखनाद करके स्वराज्य का बीड़ा उठाया। सामाजिक क्षेत्र में जन्मना जाति को चुनौती देकर समरसता की पुष्टि की। आर्थिक क्षेत्र में शोषण एवं असमानता का विरोध किया और धार्मिक क्षेत्र में चल रहे अन्धविश्वास और पाखण्ड के विरुद्ध जोरदार अभियान चलाया। महर्षि दयानन्द जी ने ही सर्वप्रथम 1867 के पूर्ण कुम्भ हरिद्वार में पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराकर धर्म के क्षेत्र में विविध प्रकार के अन्धविश्वासों और पाखण्डों को जबरदस्त चुनौती दी थी और अपने विचारों के समर्थन में उन्होंने स्थान–स्थान पर मुल्ला–मौलवी, पंडित–पुजारी आदि से शास्त्रार्थ किये थे। महर्षि दयानन्द महान् योगी थे और अप्रतिम ज्ञान के भण्डार थे। उन्होंने मात्र साढ़े तीन महीने में कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' और मात्र 26 दिन में 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' जैसे ग्रन्थों की रचना करके अपने विद्या एवं योग साधना का परिचय दिया। उन्होंने अपना साहित्य किसी लाइब्रेरी में बैठकर उपलब्ध ग्रन्थों की सहायता लेकर नहीं लिखा। इस प्रकार से महर्षि दयानन्द जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से हम अनुमान लगा सकते हैं कि महर्षि दयानन्द जी के उदात्त विचार और वैदिक मान्यताओं व सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा मानव मात्र के उपकार एवं कल्याण के लिए थी। उन्होंने अन्य मत–सम्प्रदायों की समालोचना एवं समीक्षा करने से पूर्व 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रत्येक समुल्लास के प्रारम्भ में अनुभूमिका लिखते हुए अपना मत स्पष्ट किया है कि वे किसी भी मत–सम्प्रदाय के मानने वाले लोगों के प्रति दुर्भावना से या द्वेष भावना से कुछ नहीं लिख रहे हैं बल्कि जो सत्य है उसी को जानना और जनवाना उनका अभिप्राय है। महर्षि दयानन्द जी स्पष्ट रूप से मानते हैं कि वैदिक सिद्धान्तों को अपनाने से ही संसार में सुख, शांति और सौहार्द का वातावरण बन सकता है। वे 'सत्यार्थप्रकाश' की भूमिका में लिखते हुए स्पष्ट करते हैं कि सभी मतों में बहुत सारे अच्छे लोग हैं और वे लोग मिलकर सत्य और असत्य की समीक्षा करके सत्य को ग्रहण कर लें तो सभी मानवों का बहुत बड़ा उपकार हो सकता है। महर्षि दयानन्द परस्पर संवाद के प्रबल समर्थक थे और उन्होंने 1877 में इसी भावना से दिल्ली दरबार आयोजित किया था जिसमें विभिन्न विचारधाराओं के लोग सम्मिलित हुए थे। स्वामी जी ने विषय प्रस्तुत करते हुए कहा कि हम उन–उन विषयों को अलग कर दें जिनमें हमारा मतैक्य नहीं है और जिन विषयों पर हमारा मत एक है, यदि हम उन विषयों पर मिलकर कार्य करें तो समाज का बहुत बड़ा हित हो सकता है।

स्वामी आर्यवेश जी के लगभग एक घण्टे के इस व्याख्यान से श्रोताओ को विशेष प्रेरणा मिली और व्याख्यान के बाद बहुत श्रोताओं ने स्वयं स्वामी जी से मिलकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। इस अवसर पर आचार्या प्रगति जी का व्याख्यान और श्री सतीश सत्यम जी के भजनों का व्याख्यान रहा। अन्त में ब्र. राजेन्द्र जी ने उपस्थित जनसमूह का धन्यवाद ज्ञापित किया। इस पूरे आयोजन की सफलता में आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री प्रेम कुमार मित्तल एडवोकेट, वरिष्ठ उपप्रधान श्री रघुवीर सिंह शास्त्री, मन्त्री श्री दयानन्द सेठी और कोषाध्यक्ष श्री अशोक कुमार गर्ग की विशेष भूमिका रही। इन अधिकारियों ने परिश्रम एवं पुरुषार्थ करके इस सभा का शानदार आयोजन किया और ऋषि लंगर एवं प्रसाद आदि की सुन्दर व्यवस्था की। कार्यक्रम में सर्वश्री वीरेन्द्र योगाचार्य, श्री मकेन्द्र कुमार आर्य, स्वामी भगवानदेव, स्वामी सुरेन्द्रानन्द, श्री यादराम आर्य, श्री बेगराज आर्य आदि भी उपस्थिति थे। मंच का सुन्दर संयोजन श्री रघुवीर शास्त्री जी ने किया। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन	–	पृष्ठ 232 –	मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन	–	पृष्ठ 248 –	मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शन	–	पृष्ठ 240 –	मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन	–	पृष्ठ 156 –	मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि	–	पृष्ठ 278 –	मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

''दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

दूरभाष : 011-23274771, 42415359

संस्करों की बगिया और युवा पीढ़ी

बगिया में खिले हैं नव–नव गुलाब,
जिन्हें सहेजना भी है, सँवारना भी लाज़मी।
समय पर खाद और जल मिले उन्हें,
और विषैले कीटों से रक्षा भी हो अनिवार्य।

बगिया का रखवाला ही जानता है,
कैसे इन फूलों को सुगंधित और मनोहारी बनाए।
मत उजड़ने दो यह संस्कारों की बगिया,
कोई तो आगे आए, इन गुलाबों को संभाले।

पश्चिमी फूहड़ता के अंधेरे दौर से
युवा पीढ़ी को बाहर निकालो।
संस्कारों की धरती पर खिले इन फूलों को
मुरझाने और सड़ने से बचा लो।

पश्चिमी सभ्यता के जाल में
सोई हुई है युवा चेतना,
जितनी शीघ्र हो सके
उतनी शीघ्र उन्हें जगा लो।

शिक्षित, सुसंस्कृत और चरित्रवान बने युवा,
कोई तो आगे आकर
युवा पीढ़ी को संभालो,
हाँ, कोई तो संभालो।। (1)

शायद हमारे संस्कार ही
कहीं कमजोर पड़ गए हैं,
यही कारण है कि
युवाओं को सही किनारे तक
हम पहुँचा न सके हैं।

पश्चिमी फूहड़ता में फँसकर
भटक रहे हैं आज कई युवा,
आने वाले कल में
अकेलेपन का दंश झेलेंगे वे युवा।

कुसंगति में फँसे लोग
भ्रम का जाल बिछा रहे हैं,
कोई तो आगे आए
युवाओं का भविष्य सँवारे।

बुरी संगत से उन्हें बचाकर
सही राह दिखा लो,
युवा पीढ़ी को संभालो,
कोई तो संभालो।। (2)

युवा पीढ़ी को यह बताना होगा,
कि वैदिक संस्कृति
संस्कारों का स्वर्णिम खजाना है।
युवाओं, जागो!
और सदा जागते रहो।

जो सो गए हैं चेतना की नींद में,
उन्हें फिर से जगाना होगा।
ऋषियों के बताए मार्ग पर
चलकर उदाहरण बनाना होगा।

भटके हुए युवाओं को
सही दिशा में लाना है,
करोड़ों की भीड़ में भी
उनका जीवन सफल बनाना है।

मन में दृढ़ संकल्प जगाओ,
और शीघ्र से शीघ्र
युवा पीढ़ी को जगा लो।
युवा पीढ़ी को संभालो,
कोई तो संभालो।। (3)

– दीपक कुमार छिल्लर
पता : – म. नं.–1022 ग्राम सभा कालोनी,
सरदार पटेल झील के पास, पूठकलाँ दिल्ली– 110086
मो.:–9990422051

पंजीयन संख्या (R.N.I. No.)- DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/2024-26
Licence to Post without Pre-Payment of Postage. U (C)-289/2024-26

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य समाज के त्यागी, तपस्वी एवं तेजस्वी संन्यासी, सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें :- **www.facebook.com/SwamiAryavesh** व फेसबुक पेज को लाइक करें तथा अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com

दूरभाष : 011-23274771, 42415359

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ -
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

मानव सेवा प्रतिष्ठान एवम् एन.ए.जे. चैरिटेबल ट्रस्ट मुण्डका के संयुक्त तत्त्वावधान में अभिनन्दन एवम् छात्रवृत्ति वितरण समारोह भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न

वीतराग संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की रही गरिमामयी उपस्थिति

मानव सेवा प्रतिष्ठान एन.ए.जे. चैरिटेबल ट्रस्ट मुण्डका के संयुक्त तत्त्वावधान में अभिनन्दन एवम् छात्रवृत्ति वितरण समारोह का आयोजन दीनबन्धु छोटूराम धर्मशाला, रामपुरा, दिल्ली-110035 (नियर अशोक पार्क मेन, मेट्रो स्टेशन) में दिनांक 15 फरवरी, 2026 की तिथि में भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में विशेष रूप से सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की गरिमामयी उपस्थिति तथा उनके अतिरिक्त चौधरी आजाद सिंह लाकड़ा जी अध्यक्ष, एन.ए.जे. चैरिटेबल ट्रस्ट, मुण्डका, दिल्ली, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली, स्वामी आदित्यवेश जी, महामंत्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, स्वामी सुखानन्द जी महाराज कन्या गुरुकुल, फतूही, श्रीगंगानगर, राजस्थान, मुख्य अतिथि डॉ. अमरजीत शास्त्री, वैदिक प्रवक्ता न्यूयार्क, अमेरिका, श्री सुरेश गहलावत, चौ. चन्दगीराम जी प्रधान, दीनबन्धु छोटूराम ध्र्मशाला, रामपुरा, दिल्ली, प्रो. सोहनवीर-दिल्ली आदि गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे।

इस अवसर पर 150 छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति व 25 आचार्य, भजनोपदेशक, साधु, संन्यासियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं का अभिनन्दन किया गया। ज्ञातव्य हो कि मानव सेवा प्रतिष्ठान विगत 28 वर्षों से आर्य महानुभावों के सहयोग से सामाजिक कार्यों में अहर्निश संलग्न है।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने मानव सेवा प्रतिष्ठान के क्रिया-कलापों की प्रशस्ति करते हुए कहा कि इस संस्था का जिस तरह का नाम है उसी के अनुरूप समाज के लोगों के लिए कार्य करते हुए नया कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। हमारी शुभकामनाएं हैं कि मानव सेवा प्रतिष्ठान के समस्त पदाधिकारी मिल-जुलकर इसी तरह से समाज में कार्य करते रहें और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के मन्तव्यों को पूर्ण करने में अपना योगदान देते रहें।

अनेक गुरुकुलों के संस्थापक एवं संचालक वीतराग संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने कहा कि मानव सेवा प्रतिष्ठान अपने स्थापनाकाल से ही बच्चों के नव-निर्माण तथा विद्वानों के सम्मान हेतु विशेष कार्यक्रम करती है। इसकी मैं भूरि-भूरि प्रशंसा करता हूँ। उन्होंने कहा कि राष्ट्र के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले विद्वानों का सम्मान अवश्य होना चाहिए तथा बच्चों को शीक्षित दीक्षित एवं संस्कारवान बनाने के लिए उन्हें विशेष सहयोग प्रदान किया जाना चाहिए जिससे राष्ट्र का समुचित निर्माण हो सके। मैं बड़े ही गर्व के साथ कह सकता हूँ कि मानव सेवा प्रतिष्ठान यह सभी महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। इस कार्य के लिए मानव सेवा प्रतिष्ठान तथा एन.ए.जे. चैरिटेबल ट्रस्ट के समस्त पदाधिकारियों का मैं धन्यवाद व्यक्त करता हूँ तथा उन्हें साधुवाद देता हूँ कि वे भविष्य में भी इसी प्रकार से समाजसेवा के कार्यों को निरन्तर करते रहें।

कार्यक्रम को सफल बनाने में मानव सेवा प्रतिष्ठान तथा एन.ए.जे. चैरिटेबल ट्रस्ट मुण्डका के समस्त पदाधिकारी सर्वश्री श्री चन्द्रदेव शास्त्री- प्रधान, श्री सोमदेव शास्त्री-वरिष्ठ उपप्रधान, श्री हरवीर सिंह शास्त्री-वरिष्ठ उपप्रधान, डॉ. कंवर सिंह शास्त्री-महामंत्री, श्री संजय कुमार सहरावत-मंत्री, श्रीमती कमलेश-उपमंत्री, श्रीमती उषा आर्या-कोषाध्यक्ष, डॉ. राजवीर सिंह शास्त्री-सदस्य, श्री बलजीत सिंह सांगवान-सदस्य, श्री रामपाल शास्त्री-कार्यकर्ता प्रधान, श्रीमती शीला देवी-सदस्य, डॉ. कुलदीप शास्त्री-सदस्य, डॉ. अजय कुमार शास्त्री-सदस्य, श्री जयवीर आर्य-सदस्य, डॉ. श्रीपाल आर्य-सदस्य पूर्ण मनोयोग से संलग्न रहे। कार्यक्रम का संचालन कार्यकारी प्रधान श्री रामपाल शास्त्री तथा महामंत्री श्री कंवरपाल सिंह ने बहुत ही सुन्दर तरीके से किया। कार्यक्रम के अन्त में श्री रामपाल शास्त्री जी ने समस्त सहयोगियों का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा विशेष रूप से दीनबन्धु छोटूराम धर्मशाला द्वारा किये गये सहयोग के लिए धर्मशाला के समस्त पदाधिकारियों का आभार व्यक्त करते हुए उनके प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। कार्यक्रम में ऋषि लंगर की सुन्दर व्यवस्था की गई थी जिसे सभी ने ग्रहण किया। कार्यक्रम बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में निर्धारित समय पर सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज गंगोह का 141वाँ स्थापना दिवस हर्षोल्लास पूर्वक हुआ सम्पन्न

ऋषि दयानन्द सरस्वती जी पहले से भी अधिक प्रासंगिक - स्वामी आदित्यवेश

आर्य समाज गंगोह (सहारनपुर) की स्थापना के 141 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में तीन दिवसीय वार्षिक उत्सव का भव्य आयोजन किया गया, जिसका समापन 11 फरवरी, 2026 को हुआ। कार्यक्रम में वैदिक विचारधारा, सामाजिक जागरण और राष्ट्र निर्माण पर सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए गए।

उत्सव के मुख्य वक्ता सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी आदित्यवेश जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचार आज पहले से भी अधिक प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में वैदिक सिद्धांत ही समाज को दिशा प्रदान कर सकते हैं। स्वामी जी ने यह भी स्मरण कराया कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में आर्य समाज के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आर्य समाज ने राष्ट्रभक्ति, स्वाभिमान और सामाजिक सुधार की चेतना को जागृत किया, जिसके

परिणामस्वरूप अनेक क्रांतिकारी और समाज सुधारक तैयार हुए।

इस अवसर पर आचार्य श्री सानंद आर्य तथा भजनोपदेशक श्री मोहित आर्य ने भी अपने विचार व्यक्त किए और वैदिक संदेशों के माध्यम से उपस्थित जनसमूह को प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान आर्य समाज के पदाधिकारियों द्वारा स्वामी आदित्यवेश जी का वस्त्र एवं शॉल भेंट कर सम्मान किया गया।

तीन दिनों तक चले इस उत्सव में बड़ी संख्या में आर्यजन उपस्थित रहे और वैदिक यज्ञ, भजन एवं प्रवचनों के माध्यम से समाज जागरण का संदेश प्रसारित किया गया। आर्य समाज के प्रधान श्री देवेंद्र आर्य, मंत्री श्री अमित आर्य, कोषाध्यक्ष श्री शेखर एडवोकेट सहित पूरी कार्यकारिणी का विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम में विशेष रूप से पत्रकार श्री विपिन आर्य, श्री विपिन धीमान तथा श्री वीर सिंह भावुक, श्री जगपाल आर्य सहित अनेकों गणमानय महानुभाव उपस्थित रहे।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व सम्पादक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा मुद्रक - थॉमस पुलटू एवं मुद्रणालय - ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से मुद्रित। (दूरभाष : 011-23274771, 42415359)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : **sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com** वैबसाइट : **www.vedicaryasamaj.com**
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।